भूमिका

-

: भू मि का :

कोल्हापुर के महावीर महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की एम्. फिल की छात्रा होने के नाते प्रस्तुत "शोध-प्रबंध" को पेश करते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता तथा खुशी हो रही है, इसका समूचा श्रेय मैं सर्वप्रथम महावीर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. बी. बी. पाटील तथा डॉ. शशि प्रभा जैन को देती हूँ। जिस तरह नदी पार करने के लिए अच्छे नाविक की आवश्यकता होती हैं ठीक उसी प्रकार शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के लिए भी एक अच्छे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। मेरे सौभाग्य से मुझे यह सुअवसर प्राप्त हुआ कि मुझे डॉ. सौ. शशिप्रभा जैन जैसी अच्छी मार्गदर्शिका मिल गयी, जिससे मेरी नैय्या आसानी से पार हो गयी।

एम्. फिल के लिए "विषय चुनाव" प्रक्रिया के दौरान-जो पहलू उभरकर आया, वह था स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जन-मानस में होने वाला जीवन-दर्शन का बदलाव और मूल्यों का संक्रमण। विचारों के तंतू एक एक खलते जाने पर मन केंद्रित हुआ नारी समस्या पर और अपने क्षेत्र-साहित्य में मनन के फल स्वरूप कतिपय कथा-लेखिकाओं के नाम सामने आये, जो कथित नारी-आंदोलन से जुड़ी हुई जानी जाती रही है। मन्नूजी का कथा-साहित्य पढ़ने के बाद मेरे मन में एक साथ कई प्रश्न उठते रहें। इसी के परिणाम स्वरूप मैंने एम्. फिल उपाधि के शोध कार्य के विषय के रूप में - "मन्नू भंडारी के कथात्मक साहित्य में चित्रित समस्याएँ" यह विषय चुना। पहले-पहल तो मुझे यह कार्य बहुत ही कठिण एवं दुष्कर लगा किंतु मेरी शोध मार्गदर्शिका डॉ. सौ. शशिप्रभा जैने जी के मार्गदर्शन के कारण यह काम इतना कठिण एवं असुविधाजनक नहीं रहा जितना मैं सोचती थी।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का लेखन डॉ. सौ. शशिप्रभा जैनजी के अनुभवी निर्देशन में हुआ। शोध प्रबंध से संबंधित 'समस्या' को लेकर जब भी मैं उनके घर जाती तो हर्षित एवं प्रसन्न मुद्रा से - "आओ आओ घर तुम्हारा है, और मॅडम भी तुम्हारी ही है" - कहकर स्वागत होता था इससे मार्गदर्शक के संबंध में जो "आदरयुक्त भय" की भावना होती हैं। उनमें

से उनके प्रति मेरे मन में "आदर" तो हमेशा से ही रहा है और आगे भी रहेगा किंतु "डर" हमेशा के लिये भाग गया। परिणाम स्वरूप शोध-संबंधी किसी भी प्रकार की कोई भी समस्या क्यों न हो उन्हें उसके बारें में पूछते समय मुझे तनिक भी हिचकिचाहट महसूस नहीं हुई। आप हमेशा सीधी-साधी एवं सरल भाषा में मुझे समझाती। यह उनकी विद्वत्ता और उदार दृष्टिकोण का ही परिणाम था कि मेरे विचारों की अभिव्यक्ति मे कोई व्यवधान नहीं आया। अत: मै उनकी सदैव ऋणी बनी रहूँ, इसी में मेरी सार्थकता है।

मेरा प्रधान लक्ष्य यही था कि, स्वयं एक कामकाजी नारी होने के नाते मन्नूजी के कथात्मक साहित्य मे चित्रित नारी समस्या पर कुछ लिखूँ किंतू साहित्य को दूसरी बार फिरसे सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ने के बाद मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मन्नूजीने न कि सिर्फ नारी समस्या पर प्रकाश डाला है तो इसके साथ साथ नारी समस्या से संबंधित एवं उससे जुड़ी अनेकानेक समस्याओं को भी उन्होंने लिया है। जहाँतक मुझे ज्ञात है आपके साहित्य में चित्रित सिर्फ समस्याओं को लेकर किसी ने भी शोध-प्रबंध नही लिखा है। नारी के कारण ही समाज पनपता है फिर भी वह समाज में हमेशा उपेक्षित ही पायी जाती है। भारतीय नारी अंधविश्वास, झूठी मान्यताएँ, अशिक्षा, आर्थिक परतंत्रा, शील-सुरक्षा, दहेज, सतीत्व आदि बातों में पिसती चली जाती है जिससे उसके विकास में बाधाएँ उत्पन्न होती है। अत: इस प्रकार की समस्याओं को ही मैंने अपने शोध प्रबंध का विषय बनाया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विस्तार से अध्ययन करते समय सुविधा की दृष्टि से इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में मन्नू भंडारी जी के जीवन एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। मन्नूजी को बचपन से ही साहित्य के प्रति रुचि और लगाव अपने पिता-सुखसंम्पतराय से विरासत के रूप में ही मिली है। उनका लेखन कार्य "मैं हार गई" कहानी संग्रह से शुरू हुआ है। राजेन्द्र यादव जैसे मँझे हुये कलाकार के साथ विवाह होने के पश्चात् उनकी लेखनी और भी अधिक निखरी।

द्वितीय अध्याय में समस्या आखिर किस चिड़िया का नाम हैं यह जानने का प्रयास किया है। इसमें समस्या का अर्थ, समस्या की विशेषताएँ एवं उद्देश्य, समस्याओं के प्रकार

तथा मन्नूजी के कथात्मक साहित्य में कौन-कौनसी समस्याएँ चित्रित हुई है यह बतलाने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय मे मन्नूजी के कथात्मक साहित्य का कालक्रमानुसार संक्षिप्त में समीक्षात्मक मूल्यांकन करते हुये कथावस्तुओं का परिचय दिया है। आपके हर एक कथात्मक साहित्य में किसी न किसी समस्या पर प्रकाश डाला है।

चतुर्थ अध्याय में मन्नू भंडारीजी के कथात्मक साहित्य में चित्रित समस्याओं की विस्तार से चर्चा की है। मन्नूजी के कथात्मक साहित्य में नारी समस्या का प्रमुख स्वर हैं किंतु इससे जुड़ी हुई सभी- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैवाहिक आदि समस्याओं का भी उन्होंने चित्रण किया है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है, जिसमें समूचे शोध-प्रबंध का निचोड़ है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पूरा करने में दे. भ. रत्नाप्पा कुंभार कॉलेज ऑफ कॉमर्स के प्रधानाचार्य पी. बी. कोष्टीजी ने पूरा सहयोग दिया इसलिए मैं उनकी ऋणी हूँ।

मेरे परम-पूज्य माता-पिता और पति ने इस कार्य के लिए न केवल मुझे निरन्तर प्रोत्साहन ही दिया अपितु मेरे निराश मन को भी समय-समय पर स्नेह संवलित भी किया साथ साथ इस प्रबंध को अंतिम रूप देने में भी कुछ सहायता की है। उनके प्रति मैं किन शब्दों मे आभार प्रकट करूं ? उनके प्रति तो ऋणी हूं ही।

अंत में रही शोध-प्रबंध को अंतिम रूप देने की इसलिए मुझे "जेजे" टायपराइटिंग इन्स्टिटयूट की, तथा वहा की टंकलेखिका [जो मेरी छोटी बहन भी है] कु. अनिता गाडे की सहायता मिली इसलिये मैं उन दोनों की भी आभारी हूँ।

स्थल : कोल्हापुर
तारीख : / /१९८९.

प्रा. कु. हेमलता म. गाडे.
[प्रा. सौ. हेमलता स. पाटील]